International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

'रविवार' सासाहिक में साहित्यक युगबोध

डा॰ भावना देवी।
हल्दुखाता, कोटद्वार
पौड़ी गढ़वाल) उत्तराखंड(
पिनकोड-246149

'रविवार' साहित्यिक पत्रिका नहीं थी। परंतु वह जनसाधारण की पत्रिका अवश्य थी। साहित्य अपने आप में जनसाधारण के जीवन का दर्पण होता है। यद्यपि प्राचीन हिंदी साहित्य पूर्णत जनजीवन से संबंधित नहीं था। : परंतु आधुनिक युग मेंप्रवेश करने के बाद से तो हिंदी साहित्य पूरी तरह से जनसाधारण के जीवन का प्रतिबिंब बनकर ही विकसित हुआ है। इसलिए जनसाधारण की पत्रिका होने के नाते 'रविवार' ने अपने अंको में हिंदी साहित्य की विधाओं को स्थान दिया ।'रविवार' की साहित्यिक युगबोध की चेतना की पूर्णता का बोध तब होता है जब हम देखते हैं कि 'रविवार' ने अपने अंको में हिंदी साहित्य की उन विधाओ से ही चुनकर रचनाओं को प्रकाशित किया,जो बदली परिस्थितियों में बदलती मानसिकता, बढ़ते भौतिकतावाद के कारण रिश्तो में आए बदलाव,व्यक्ति के अंदर बढ़ते अहम, गरीबी, बेरोजगारी और इन सब समस्याओं से जूझते एक आम इंसान को चित्रित करती हैं। 'रविवार' में साहित्यिक विधाओं को स्थान देने का एक उद्देश्य नए साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने का भी था। 'रविवार' में प्रकाशित हरीश निगम का यह गीत देखिए–

1* " रोज कई बार
जुड़ते हैं
टूट टूट कर
छा गया
धूल का धुंआ
कदम कदम
अंधा कुआं
रोज कई बार

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

उबरे हैं
डूबडूब कर–
भूख प्यास की
बस्तियां
तन हुए
मोमबत्तियाँ
रिसते हैं
बूंद बूंद कर।"

आम आदमी के जीवन का चित्र खींचता हुआ यह गीत पाठकों द्वारा काफी सराहा गया था। 'रविवार' ने अपने अंकों में प्रयोगवाद की तर्ज पर लिखी गई कुछ प्रयोगवादी कविताओं को भी स्थान दिया था। 'रविवार' के प्रकाशन का दौर प्रयोगवाद के अस्त का समय था तथापि उस युग में प्रयोगवादी रचनाएं पाठकों द्वारा अत्यधिक पसंद की जाती थी । पाठकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए यदा कदा प्रयोगवादी रचनाएं प्रकाशित की जाती––थी ।श्री राम तिवारी जी की यह प्रयोगवादी कविता देखिए

2*"चाकू आ
साहब को
मत डरा
कपड़े पहन
बस्ता उठा
पढ़लिख–
कारकून बन
कायदे से दफ्तर जा
चुगली कर
साहब को जमा
पदोन्नति के

गणित बिठा
बीवी ला
बच्चे पाल
बीमार पड़
दवादारू कर–
सिनेमा देख
डटकर खा
भजन कर
और
और क्या
सो जा"!

' रविवार' ने अपनी अंको में हिंदी साहित्य की प्राचीन और प्रचलित विधा कविता को तो स्थान दिया ही साथ ही नई विधाओं का भी खुले दिल से स्वागत किया । संस्मरण को हिंदी की नवीन विधाओं में गिना जाता है ।'रविवार' में प्रकाशित संस्मरण तत्कालीन युगबोध के साथ हृदय की तरलता को सुव्यवस्थित भाषा शैली में– अभिव्यक्त करते हुए दिखाई देते हैं।

3*"बाबूजी जब पोथी प्रसंग से थक जाते तो शक्ति बटोरने के लिए हम लोगों के बीच आ बैठते थे विनोद की– से उठते और ठहाका लगाते अपने अध्ययन कक्ष में घुस–वर्षा में हम लोगों को नहलाकर पनडब्बा लिए धीरे रहकर रुलाती है–मुखर क्षणों की याद आज रह–आंगन के उन विनोद–जाते। अपने घर, जिनसे हमारा संबंध हमेशा के लिए टूट गया। अब वह दिन कभी नहीं आएगा,जब हम बाप–बेटी मिलकर मां को छेड़ेंगे और मां झूठ– जहां नदी नहीं बहती हो) मूठ हम लोगों पर नाराज होगी। बाबूजी उन्हें बांगर,वह ग्रामीण क्षेत्र की बेटी कहेंगे और (तरह से मज–हम सब उनकी हां में हां मिलाएंगे । तरह ाक करके मां को तंग करेंगे और मां पानदान सामने रखकर सरोते से सुपारी काटती हुई सब व्यंग्य बाणों को एक महारथी की तरह झेलती हुई बीच बीच में अपने– धज्जी उड़ा देंगी और फिर लाचार होकर बाबूजी–तरकश से एकाध अमोघास्त्र निकाल दुबे खानदान की धज्जी अपनी मूंछों के बीच सेमुस्कुराएंगे और फिर सारा घर ठहाकों से भर जाएगा।"

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

'रविवार' ने अपने अंको में हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं को स्थान दिया। 'रविवार' में केवल कम पृष्ठों में आने वाली साहित्यिक रचनाएं ही प्रकाशित नहीं हुई अपितु उपन्यास जैसी विस्तृत पृष्ठभूमि वाली रचनाएं भी रविवार की साहित्यिक सामग्री का अंग बनी ।'रविवार' में कई प्रसिद्ध अप्रसिद्ध उपन्यासों की श्रृंखलाएं/ प्रकाशित हुई।

4*" प्लेटफार्म से उस ट्रेन के चले जाने के बाद सैकड़ों की संख्या में गौरैया आकर बिजली के तार पर बैठ गई ।मेरे मन में हल्की सी झुंझलाहट हुई। वह वायदा करके शायद भूल गई होगी और तो कोई कारण नहीं हो सकता उसके न आने का । हालांकि मैं प्राय उसके बारे मे कुछ भी नहीं जानता था । तभी दूसरी ओर से अगली ट्रेन : आती दिखाई दी। उस ट्रेन के एकदम पास आने से वे सभी गौरैया एक साथ उड़कर बगल के दूसरे तार पर बैठ गई। छोटे गौरैया के बच्चे की मां को पहली बार ज्ञात हुआ कि वह खाली लाइन के ऊपर तने तार पर बैठ गई । मैं एक बेंच पर बैठकर उन गौरैयों के बार बार अड्डा बदलने को एक खेल की तरह देखने लगा और किसी के न–आने की खीझ को उस बीच न जाने कब भूल गया?"

उपन्यास विधा की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसमें छोटी से छोटी चीजों का भी विस्तृत वर्णन करने का अवसर लेखक सहज ही ढूंढ निकालता है ।'रविवार' साप्ताहिक ने साहित्यिक युगबोध के कारण न केवल विविध विधाओं की साहित्यिक रचनाएं प्रकाशित की अपितु साहित्य जगत से जुड़े प्रमुख समाचारों को प्रकाशित कर समाज में साहित्य की आवश्यकता और उसके महत्व का भी प्रतिपादन किया।

5*" कुछ पुरस्कार अभी साहित्यिक उत्तेजना पैदा करते हैं किंतु ज्ञानपीठ पुरस्कार उनमें नहीं है ।अज्ञेय की कविता पुस्तक–'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए जब यह पुरस्कार घोषित हुआ तो हिंदी के रसिको में जरूर उत्तेजना पैदा हुई होगी परंतु ज्ञानपीठ पुरस्कार की तरह उसका समारोह भी अघटना की तरह गुजर गया। 28 दिसंबर की शाम को कलकत्ता के कला मंदिर में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में अज्ञेय को एक लाख का चैक और सरस्वती की प्रतिमा प्रदान की गई।"

ऐसा ही एक और समाचार देखिए–

6*" छायावाद एक काव्य आंदोलन भर नहीं था बल्कि भारतीय पुनर्जागरण की चेतना का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज भी था । महादेवी वर्मा छायावाद के आधार स्तंभों में से एक हैं और उनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक 'यामा' को डेढ़ लाख रुपए का ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाना उनकी युग व्यापी साधना का विलंबित ही सही पर वाजिब सम्मान है।"

साहित्य के क्षेत्र में रविवार ने कई सराहनीय कार्य किए ।साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन करते रहना तो महत्वपूर्ण है ही परंतु साहित्यकार को अपने पाठकों से परिचित कराना और वह भी महिला साहित्यकारों को साक्षात्कार के माध्यम से पाठकों के सम्मुख सम्मान सहित प्रस्तुत करना,उस युग मे, जब महिला साहित्यकारों में केवल गिनती के नाम थे,अपने आप में 'रविवार' के साहित्यिक युगबोध का परिचायक है–

7*" योजना यह थी कि महादेवी वर्मा,आशापूर्णा देवी और अमृता प्रीतम यानी हिंदी, बंगला और पंजाबी तीन भाषाओं की सर्वश्रेष्ठ जीवित लेखिकाओं से देश की मौजूदा स्थिति, लेखकों और बुद्धिजीवियों की भूमिका और नारी मुक्ति आंदोलन के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की जाए। यही सोचकर सवालों का पैटर्न भी लगभग एक – सा ही रखा गया, हालांकि इसका पूरी तरह पालन नहीं हो पाया। पाठक देखेंगे कि इस बातचीत से एक तरह की निराशा ध्वनित होती है। महादेवी कहती हैं कि इतिहास मे कभी कभी अंधकार के युग भी आते हैं और मौजूदा– दौर वैसा ही लगता है। अमृता प्रीतम का मानना है कि इंसानी मूल्य बहुत गिर गए हैं और आशापूर्णा देवी इस चीज से सबसे ज्यादा दुखी और परेशान हैं कि हम धीरे धीरे अपनी पहचान खो रहे हैं। हमारा जीवन जटिल– पीड़ादायक और निसंग हो गया है। आज की पीढ़ी के लेखक इस पीड़ा को शायद इतने तीव्र ढंग से महसूस नहीं करते क्योंकि वह खुद भी कहीं ना कहीं इस भाग दौड़ में शामिल हैं और उनका एक वर्ग ऐसा भी है जिसे– आशा करने का अधिकार सैद्धांतिक मान्यताओं से मिलता है वैसे तीनों को ही उम्मीद है कि हमारे अंदर का आदमी पूरी तरह नहीं मरा है और इस जद्दोजहद के भीतर से ही मनुष्य की अस्मिताफिर अपने को स्थापित करेगी"

'रविवार' ने साहित्यिक युगबोध के चलते निरंतर साहित्यिक गतिविधियों पर दृष्टि रखी और उन्हें यथारूप अपने

अंको में प्रकाशित किया। साहित्यिक लेख,निबंध और आलोचना जैसी नवीन विधाओं से संबंधित रचनाओं को अपने अंकों में स्थान देकर 'रविवार' ने इन विधाओं को अपनी पहचान बनाने में सहायता की । निर्मल वर्मा के साहित्यिक निबंध 'मुक्तिबोध भारतीय मध्यम वर्ग के सबसे निर्मम आलोचक थे'। एक प्रतिष्ठित कवि के (मुक्तिबोध) साहित्य को मध्यवर्गीय व्यक्ति से दूर होने के कड़े आरोप के साथ प्रकाशित करने का साहसपूर्ण कदम है । यह एक भिन्न और क्रांतिकारी आरोप है–

8*" मुक्तिबोध कभी कलात्मक सत्य की कसौटी विश्व दृष्टि में ढूंढते हैं और कभी अपने वर्ग के अनुभवों में। इसका कारण यह है कि वह स्वयं लेखक के निजी वैयक्तिक अनुभवों के सत्य में कभी विश्वास नहीं कर पाए। वह व्यक्ति की आत्म केंद्रित सत्ता को संदेह की दृष्टि से देखते थे। व्यक्ति उनकी नजरों में झूठी इकाई है । जो इकाई अपने में झूठ है क्या उसके अनुभव किसी सच्चाई का वाहक हो सकते हैं। अपनी अकेली सत्ता में मुक्तिबोध एक जगह लिखते हैं" –साहित्य में प्रकाश ही प्रकाश है।किंतु " हमें प्रकाश में सत्यों को ढूंढना है । हम केवल साहित्यिक दुनिया में ही नहीं वास्तविक जीवन में रहते हैं। इस जगत में रहते हैं ।साहित्य पर आवश्यकता से अधिक भरोसा रखना मूर्खता है ।डायरी) पृष्ठ 70)"

'रविवार' ने साधारणतः सभी विधाओं की रचनाओं को प्रकाशित कर अपने साहित्यिक युगबोध का विस्तार किया है । नाटक हिंदी साहित्य की ऐसी विधा है, जो केवल पुस्तक के पन्नों पर ही नहीं सिमटती अपितु पृष्ठों से निकलकर रंगमंच पर विस्तार पाती है। 'रविवार' ने अनेक बार अपने अंकों में नाटकों की रंगमंचीयता से संबंधित समाचार प्रकाशित किए तो कई बार नाटकों को श्रृंखलाबद्ध रूप में अपने अंको में प्रकाशित भी किया।

9*" पिछले दिनों कलकत्ता में मुंबई के नाट्यकर्मी शफी ईमानदार के दो नाटक 'अनामिका कला संगम' के सौजन्य से मंचित हुए – 'दिन आए ना बने' और 'अनजान शहर'। 'बिन आए ना बने' नकली समस्याओं से जूझते एक बाल बच्चेदार पुरुष और लगभग वैसी ही स्थितियों से गुजर रही एक महिला की चुहलबाजी की – दास्तान है।'अनजान शहर' की चिंता एक जायज चिंता है ,जो इस व्यवस्था की कमियों से उपजी है और जिसमें सूक्ष्म रूप से उसे समझाने का माद्दा है। यह जरूर है कि यह नाटक उच्च मध्यम वर्ग के इर्दगिर्द सिमटा हुआ है–, जिसके पास फ्रिज है, स्टीरियो है, टेलीविजन है, शैपेन है, नहाने का गर्म पानी उपलब्ध है लेकिन इसके बावजूद भी यह नाटक उस व्यवस्था पर उंगली रखने में सफल हुआ है, जिसकी वजह से एक खाता पीता परिवार भी–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at http://euroasiapub.org/journals.php
Vol. 6 Issue 12, December 2016
ISSN: 2249-7382 Impact Factor: 6.225 | Thomson Reuters ID: L-5236-2015

हर वक्तअपने को अरक्षित महसूस करता है।"

'रविवार' के साहित्यिक युगबोध के कारण इसका शायद ही कोई ऐसा अंक प्रकाशित हुआ हो, जिसमें किसी भी साहित्यिक विधा का प्रकाशन न हुआ हो अथवा साहित्य की चर्चा भी न हुई हो, यहाँ तक कि अपने आगे के वर्षों में तो रविवार के होली, दीपावली आदि त्योहारों के अवसर पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक भी साहित्यिक विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुए 'रविवार' में सबसे अधिक जिस विधा का प्रकाशन हुआ, वह है कहानी। – कहानी हिंदी साहित्य की पुरानी विधाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। यह हर आयु वर्ग के पाठक को सहज ही अपने से जोड़ लेती है ।'रविवार' में प्रकाशित एक कहानी का अंश देखिए–

10*" कमरे में प्रवेश करने से पहले उसने पीछे मुड़कर बाहर नजर दौड़ाई पर उसे उस लंबी कतार में वह बूढ़ा आदमी कहीं दिखाई नहीं दिया । उसके मन में एक अनजानी सी लकीर आरे की तरह काट –गई। उसका मन गौतम बुद्ध की भांति द्रवित हो उठा । उसका जी चाहा कि वह एमएस के सोर्स का इस्तेमाल उस बूढ़े के लिए करे और स्वयं उस अंतहीन कतार में खड़ा हो जाए। कमरे में प्रवेश करने के बाद एक क्षण को वह ठिठका ही था कि उसकी निगाह मेज के उस पार बीचोबीच बैठे सर्जन– इंचार्ज से टकराई और उसने गौतम बुद्ध को धक्का देकर मन से बाहर ठेल दिया। झुककर विनीत मुद्रा में डॉक्टर को नमस्कार किया और सर्जन इंचार्ज के सामने अपना पर्चा सारी टेस्ट रिपोर्ट और एक्स रे रख दिए। इंचार्ज ने अपने सिर पर हाथ फेरते हुए उसकी ओर देखने के बजाय– अपने जूनियर की ओर देखा जो दोनों हाथ आगे बांधे विनीत मुद्रा में खड़ा था।"

पूर्व प्रतिष्ठित विधाओं की रचनाएं प्रकाशित करना तो किसी भी पत्र सरल कार्य होता है।–पत्रिका के लिए सहज– परंतु'रविवार' ने अपने साहित्यिक युगबोध के कारण हिंदी साहित्य की नवीनतम विधाओं की रचनाओं को भी अपने अंकों में प्रकाशित कर उन्हें प्रतिष्ठित होने में सहायता की। रिपोर्ताज को भी हिंदी साहित्य की नवीनतम विधाओं में गिना जाता है। रविवार में प्रकाशित जीवन सिंह ठाकुर के रिपोर्ताज 'भारत बंद भारत खुला –' का एक अंश देखिए–

11*" एक लंबी चुप्पी हम तीनों के बीच तैरती रही । इस चुप्पी की असहनीयता से तड़पकर मैंने रामबक्ष सै पूछा,' क्यों, बता सकते हो यह भारत बंद तथा भारत खुला का क्या मामला है?' उसने कहा, 'अरे साहब हम

कोई मूर्ख हैं। इस शहर में 15 साल से ठेला चला रहे हैं । शहर के नामीगिरामी लोग हमारे ठेल–ा पर चार्ट खा गए और पैसे नहीं दिए। घर जाओ तो गेट बंद। अपना तो भारत बंद ही है। सब तरफ 'नो ऐडमिशन' 'स्ट्रिक्टली प्रोहिबिटेड' इन की तख्तियां लगी है। कहीं प्रवेश ही नहीं, चारों तरफ हमारा तो बंद है।"...

'रविवार' में प्रकाशित साहित्यिक रचनाएं अपने युग के अनुसार भारत का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करती हैं। राजकिशोर द्वारा रचित निबंध 'दुसाध्य वीणा:' का यह उदाहरण देखिए–

12*" इस नक्शे में भारत की जगह कहां है, यहां परंपरा और आधुनिकता का एक विचित्र खेल दिखाई पड़ता है, जिसमें एक की सड़न दूसरे की कुरूपता को बढ़ा रही है। जरा कल्पना कीजिए उस राष्ट्र के द्वितीय असमंजस की जो एक और तो अंतरिक्ष में अपना उपग्रह भेज रहा है और दूसरी ओर हरिजनों को अपने मंदिरों में प्रवेश न करने देने के लिए कृत संकल्प है। यह भी गौर करने की बात है यह उपग्रह भेजना किसी सामाजिक प्रक्रिया का उत्कर्ष नही है। भारतीय यथार्थ में वह अलग अलग थलग घटना जान पड़ती है। इसी प्रकार हरिजनों द्वारा मंदिर प्रवेश– की कोशिश भी किसी सामाजिक आंदोलन का नतीजा नहीं है। ज्यादा से ज्यादा उसे एक आर्य समाजी नेता जो स्वयं मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करताकि व्यक्तिगत सनक कह सकते हैं।"

इस प्रकार 'रविवार' साप्ताहिक ने एक साहित्यिक पत्रिका न होते हुए भी अपने विविध अंकों में न केवल साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचनाओं को प्रकाशित किया अपितु उनका उत्साहवर्धन भी किया । अपने देश और समाज के चैतन्य पाठक के लिए 'रविवार' ने तात्कालिक युगबोध के अनुरूप साहित्यिक सामग्री प्रकाशित की। रविवार में प्रकाशित रचनाओं में तत्कालीन साहित्य धारा का अविरल प्रवाह देखने को मिलता है,जो इस साप्ताहिक पत्रिका के साहित्यिक युगबोध का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 – 'रविवार' खंड 4, अंक –26, पृष्ठ संख्या 43

2 – 'रविवार' खंड 4, अंक –26, पृष्ठ संख्या 41

3 – भारती मिश्र –'हमारे आंगन का उल्लास बाबूजी' '
'रविवार' खंड 2, अंक –41, पृष्ठ संख्या 36

4 – 'रविवार' खंड 3, अंक –16, पृष्ठ संख्या 39

5 – 'रविवार' खंड 3, अंक–15, पृष्ठ संख्या 37

6 – 'रविवार' खंड 6, अंक –48, पृष्ठ संख्या 26

7 – 'रविवार' खंड 6, अंक –41, पृष्ठ संख्या 26–27

8 – 'रविवार' खंड 4, अंक –11, पृष्ठ संख्या 41

9 – 'रविवार' खंड 6, अंक –48, पृष्ठ संख्या 43

10 – सुरेंद्र अरोड़ा 'नौ दिन चले अढ़ाई कोस' (लंबी
कहानी ('रविवार' खंड 9, अंक 11, प्रश्न संख्या 113

11 – जीवन सिंह ठाकुर –'भारत बंद भारत –
खुला' (रिपोर्ताज ('रविवार' खंड 12, अंक –51 पृष्ठ संख्या 67

12 – राजकिशोर 'दुसाध्य वीणा:' (निबंध ('रविवार' खंड
12, अंक –10 पृष्ठ संख्या 24